



ACTION NEWSLETTER

कोरोना से ठीक होने के बाद भी लापरवाही नहीं

Drive Run Vaccine with Page No. 1

Media Coverage Page No. 3

Largest Drive Thru Vaccination Programme by Sri Balaji Action Medical Institute at Pacific Mall



With the onset of pandemic, a paradigm shift in way of vaccination, to get the native vaccinate swiftly, Sri Balaji Action Medical Institute has joined hands with Pacific Mall, Tagore Garden and started the grand **Drive in Vaccination** Programme from 14th June. The Programme was inaugurated by District Magistrate - Ms Kriti Garg, Dr Anand Bansal- Medical Director with Mr Vinay- Mall Director on 10am. Along many dignities from hospital & mall everyday, cards were coming through out the day and hospital is administrating around 230 jabs a day. This drive has because the are of the largest is drive through vaccination programme of the country. Action Group of Hospitals reached out to many residents of North West Delhi through its programme **Putting Vaccination into Action**, and continue to preform its duty to keep the people safe.

Doctor Facebook Live Season- 38



Doctor Live

World Brain Tumour Day Special

Topic:

Brain Tumour - Myths & Treatment
Know from our Neuro Surgeons



Dr. Prashant Kumar Chaudhary
Sr. Consultant- Neuro Surgery



Dr. Naveen Aggarwal
Sr. Consultant- Onco Pathology

TUESDAY
JUNE 8th 2021
TIME: 12:30 PM

Join Us Live On Facebook

SBAMI.Delhi



On the occasion of world brain tumor day, i.r 8th June 2021, Sri Balaji Action Medical Institute organised a Facebook Live . In this Facebook Live , Dr.Prashant Kumar Chaudhary , Sr.Consultant- Neurosurgery and Dr. Naveen Aggarwal, Sr.Consultant- Onco Pathology addressed the public collectively about myths and facts related to brain tumour. According to Dr. Prashant Chaudhary,

brain tumor is a mass or a nodule which is not normal inside the brain. Brain tumors can be divided into two categories, one is benign and the other is cancerous. There is a misconception amongst the common public that brain cancer and brain tumor are the same. It is also wrongly understood by the common man that a brain tumour surgery patient will fall into coma, paralysis and other serious complications. By the use of latest technology the brain tumor surgery and treatment is not at all fatal. By the advancement of technology in neuro-intervention and critical care, the path to recovery has become very smooth now. Dr. Prashant and Dr. Naveen emphasized on the signs and symptoms of brain tumor which are usually ignored at the initial stage. They can be unusual behavioral changes, difficulty in walking, blurred vision, speech impairment, fits which are not getting cured, vomits with headache, numbness in hand and feet. A simple CT Scan can help in the diagnosis of brain tumor depending upon these symptoms, whether the patient is suffering through brain tumor or not at, last the nature of the brain tumor will let the doctors know whether chemotherapy or radiation therapy will be required at a later stage of post surgery.

BIRTHDAYS in JULY



01-Jul-Dr. Rohit Vishnoi

04-Jul-Dr. Alok Kumar Kalyani

07-Jul-Dr. J.B. Sharma

15-Jul-Dr. Puneet Aggarwal

16-Jul-Dr. Sandeep Bhalla

23-Jul-Dr. Rakesh Oberoi

24-Jul-Dr. Sandhya Koche

25-Jul-Dr. Ashwani Gupta

Family members of Sri Balaji Action Medical Institute & Action Cancer Hospital wishes each one of you a very Happy Birthday

www.actionhospital.com

www.actioncancerhospital.com

Wisdom Quotes: One Day or Day One... You Decide. (By Rohit Sharma)



Times Event

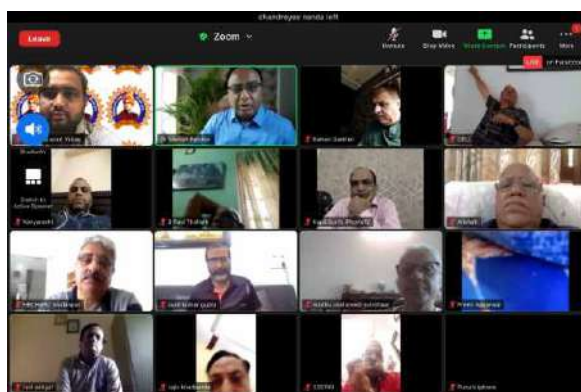
Cancer: CAUSES, SYMPTOMS & TREATMENT IN MEN & WOMEN



Supported by



On the occasion of national cancer day, 6th June, Dr. Manoj Sharma has addressed the medical fraternity of Lucknow and shared the useful information through his programme on cancer cause, symptoms and treatment in women and men. Which was attended by 250 people.



Acclaimed webinar with Dr. Manish Pandey on the occasion of National Cancer Survivor Day, he delivered the messages and learnings to defeat this disease with a positive mindset and religiously following the advice of their doctors. The programme was attended and addressed by many survivors and renowned dignitaries like Dr. Rath, Dr. Manish Gularia, Dr. Tejinder Kataria, Dr. Hukku etc.



Organised the vaccination drive simultaneously at country's one of the largest plywood enterprises - Action TESA - Peeragadi, from 10 am to 5 pm on 16th June, 2021.



Organized a two-day vaccination drive with renowned footwear company - Action Flotter - Peeragadi, from 18th to 19th June 2021.



Organized a two-day vaccination drive with a popular electronic products maker Action Microtek - Peeragadi, from 21st to 22nd June 2021. Putting



On the onset of vaccination drive through, Sri Balaji Action Medical Institute organised a vaccination camp for residents of Sunder Vihar. Where people from the age of 18 onwards were administered.



Our Drive-through programme vaccination into action has been covered by many newspapers like Dainik Jagran, India Today and news channels like CNBC 18, Zee Business and Gtv.



Sri Balaji Action Medical Institute organised a vaccination camp with one of the oldest footwear brands Action Shoes, Udyog Nagar, on 23 June 2021.



Hospital has organised a vaccination programme with renowned fitness chain many residents have taken the advantage of their programme fitness chain CULT (by founders of Flipkart), Rajouri Garden, on 23rd and 24th June 2021.

All consultants are requested to kindly update Medical Director about the advanced and complicated surgeries performed so that same can be provided to PR Agency for publicity

Media Coverages

अगर आप बाल झड़ने की समस्या से परेशान हैं तो आपकी किचन में मौजूद बहुत-सी चीजें मददगार हो सकती हैं। कौन-सी हैं वे चीजें, उन्हें कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है, जानिए यहां।



बालों की सेहत रहेगी दुरुस्त

बाल झड़ने के कारण

- नींद पूरी न होना
- शरीर में पोषक तत्वों की कमी
- आनुवंशिकता
- हार्मोनल बदलाव
- किसी गंभीर बीमारी से परत होना या दवाओं का दुष्प्रभाव
- बालों की सही देखभाल न करना
- बढ़ता प्रदूषण एवं तनाव
- शरीर में पानी की कमी

आंच बंद कर दें। ठंडा होने पर इस पानी से सिर धोएं।

● नीम की पत्तियों का पेस्ट दही में मिलाकर स्कैल्प पर लगाने से भी बालों का झड़ना कम होता है।

● एक प्याज का रस निकाल लें। इसे अच्छी तरह स्कैल्प पर लगाएं और दो-तीन घंटे बाद सिर धो लें।

● अंडे के सफेद हिस्से को फेंट कर



स्कैल्प पर लगाएं। कुछ ही दिनों में बाल घने, मुलायम होने के साथ झड़ना भी कम होगा।

● दो नींबू के रस को गुनगुने पानी में मिलाएं और सौंप करने के बाद इस पानी से स्कैल्प को मसाज करें। पांच मिनट बाद पानी से सिर धोएं।

● एक प्याज का रस निकाल लें। इसे अच्छी तरह स्कैल्प पर लगाएं और दो-तीन घंटे बाद सिर धो लें।

● अंडे के सफेद हिस्से को फेंट कर

सर्जनी फीचर्स

इन्फुटर्स: डॉ. विजय सिंघल, सीनियर कंसल्टेंट, डर्मेटोलॉजी, श्री बालाजी ऐक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली।

डिस्कलेमर: अगर किसी गंभीर बीमारी या लयका संबंधी समस्या से पीड़ित हैं तो ये नुस्खे आजमाने से पहले अपने चिकित्सक से सलाह जरूर लें।

+सर्जनी जागरण+35

कोरोना से ठीक होने के बाद भी लापरवाही नहीं

कोरोना की दूसरी लहर ने देश को बुरी तरह से प्रभावित किया है। राहत यह है कि लाखों की संख्या में रोजाना लोग ठीक भी हो रहे हैं। पर संक्रमण मुक्त हो चुके लोगों के लिए समय अभी भी एहतियात रखने का ही है। जानकारी दे रही हैं स्वाति गौड़



कोविड 19 के हल्के लक्षणों से संक्रमित व्यक्ति को ठीक होने में करीब दो सप्ताह का समय लगता है, जबकि मध्यम और गंभीर संक्रमण में करीब 4 सप्ताह तक भी लग सकते हैं, जिसे मेडिकल भाषा में लॉन्ग-हॉल कोविड कहते हैं। कोरोना से ठीक होने के बाद भी लोगों में कुछ परेशानियां रह सकती हैं। ऐसे में लंबे समय तक देखभाल करना जरूरी है। विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना वायरस मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करता है। एक बार जब फेफड़े संक्रमित हो जाते हैं तो अलग-अलग मरीजों पर अलग असर दिखता है। इसमें फेफड़ों की कार्य-प्रणाली तो प्रभावित होती ही है, साथ ही स्थिति गंभीर होने पर व्यक्ति को लंबे समय तक ऑक्सीजन थैरेपी की भी जरूरत पड़ सकती है। इसके अलावा लगातार खांसी, सांस में खिंचाव या सीने में जकड़न, कमजोरी, मांस-पेशियों में दर्द, भूख नालगना, बहुत नींद आना, गफलत और चिड़चिड़ापन जैसी परेशानियां भी हो सकती हैं। इसलिए कोरोना से ठीक होने के बाद भी सेहत का ढंग से ध्यान रखना जरूरी है। विशेषज्ञों के अनुसार ठीक हो चुके लोगों में फेफड़ों तथा शरीर के अन्य हिस्सों से जुड़ी कुछ समस्याओं को ठीक होने में थोड़ा समय लग जाता है।

स्वास्थ्य, उग्र शारीरिक क्षमता व रोगों (यदि हैं तो) के अनुसार ही व्यायाम चुनें। सामान्य व्यस्क को कसरत के लिए आधा घंटा निकालना ही चाहिए। बुजुर्गों के लिए भी हल्के-फुल्के योग, आसान स्ट्रेचिंग लाभदायक है।

संक्रमित हैं तो डॉक्टर से पूछ ब्रीदिंग एक्ससाइज करें

स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी नए दिशा-निर्देशों के अनुसार हल्के लक्षण वाले मरीज 10 दिन बाद कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते

धीरे-धीरे करें तापसी

● खान-पान और जीवनशैली में संतुलन बनाए रखें। शारीरिक श्रम ज्यादा न करें।

● अगले कुछ महीनों तक शरीर में आने वाले बदलावों का ध्यान रखें। परेशानी होने पर डॉक्टर को बताएं।

● ठीक होने पर भी यदि ऑक्सीजन लेवल सामान्य नहीं हो रहा हो, तो घबराएं नहीं। डॉक्टर से बात करें। सांस से जुड़े व्यायाम करें।

● तनावमुक्त रहें और सकारात्मक सोच रखें।

● इलाज के दौरान ऑक्सीजन थैरेपी ले चुके लोग विशेष ध्यान रखें। अपनी कार्य क्षमता धीरे-धीरे बढ़ाएं ताकि फेफड़ों पर एकदम से दबाव ना पड़े।

● मास्क जरूर पहनें। कोविड संबंधी नियमों का पालन करें।

हुए होम आइसोलेशन से बाहर आ सकते हैं और 14 दिन बाद उन्हें दोबारा टेस्ट की भी जरूरत नहीं है। लक्षणों के आधार पर डॉक्टर ठीक होने के बाद भी कुछ टेस्ट करवा सकते हैं, जो किसी भावी गंभीर रोग पर नियंत्रण पाने में मददगार साबित हो सकते हैं।

आईजीपी एंटीबॉडी टेस्ट: इसमें संक्रमण से ठीक होने के बाद मरीज के खून में मौजूद एंटीबॉडीज के स्तर का पता लगाते हैं।

कंप्लीट ब्लड काउंट (सीबीसी): इसमें लाल और सफेद रक्त कणिकाओं के साथ प्लेटलेट्स जांचते हैं, जिससे कोरोना से शरीर पर हुए प्रभाव का पता चलता है।

विटामिन-डी टेस्ट: कोरोना संक्रमण के दौरान शरीर में विटामिन-डी तेजी से कम हो जाता है, इसकी जांच भी जरूरी है।

हार्ट इमेजिंग और कार्डियक स्क्रिनिंग: कोविड संक्रमण दिल की मांसपेशियों को नुकसान पहुंचा सकता है। मध्यम और गंभीर संक्रमण से निकले मरीज इस बात की विशेष रूप से शिकवात करते हैं।

एचआर-सीटी: सांस से जुड़ी समस्याएं बनी हुई हैं, तो इसे कराया जा सकता है।

ग्लूकोज व कोलेस्ट्रॉल की जांच: यदि मरीज पहले ही इन समस्याओं से पीड़ित रहा है तो हृदय की नियमित जांच जरूरी है।

विशेषज्ञ: डॉ. अरविंद अग्रवाल, वरिष्ठ सलाहकार-इंटरनल मेडिसिन, श्रीबालाजी ऐक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट से बातचीत पर आधारित।

Appearance in Medical Buyer by Dr. Anand Bansal, Medical Director

भास्कर नॉलेज सीरीज

धीरे-धीरे गहरी सांस लें और छोड़ें, इससे ब्रीदिंग में अवश्य सुधार होगा

भाप लेने से कोरोना में लाभ मगर ये अंतिम विकल्प नहीं, इससे सीने की जकड़न से क्षणिक राहत मिलती है; संक्रमण खत्म नहीं होता

भास्कर एक्सपर्ट



डॉ. अरविंद अग्रवाल

सीनियर कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी ऐक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट

कोरोनाकाल में सांसों पर ऐसा संकट आया है कि लोगों यह जिज्ञासा सबसे बड़ी है कि सही से सांस कैसे लें। कैसे अपनी ब्रीदिंग सुधारें और कितनी कसरत जरूरी है। ऐसे ही सवाल पर दैनिक भास्कर के पवन कुमार ने विशेषज्ञ से बात की। विशेषज्ञ से जानिए, कैसे सुधारेगी ब्रीदिंग...

आधे घंटे कसरत उचित, लेकिन अपने स्वास्थ्य के हिसाब से ही कसरत चुनें

फिट लोग भी संक्रमण का शिकार हो रहे हैं। बीमारी से बचाने में फिटनेस कितनी कारगर है?

कोविड संक्रमण किसी को हो सकता है, इससे कोई अछूता नहीं है। हालांकि संक्रमण के बाद रोग की गंभीरता बहुत हद तक व्यक्ति के मौलिक स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। कोविड संक्रमण श्वसन तंत्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण स्वास्थ्य पर असर डालता है, इसलिए गंभीरता का आकलन पहले से करना ठीक नहीं है। फिर मौलिक स्वास्थ्य ठीक खना बहुत से रोगों से लड़ने में मदद करता है।

जिम बंद हैं। क्या घर पर हल्की-फुल्की कसरत खुद को फिट रखने के लिए काफी है?

संक्रमण के दौर में घर पर ही रहना और हल्के फुल्के व्यायाम करना, दोनों जरूरी है। जैसे स्टेशनरी जॉगिंग, इसमें एक ही जगह खड़े होकर जॉगिंग करते हैं, इसे सुबह शाम 20-20 मिनट किया जा सकता है। स्ट्रेचिंग भी कर सकते हैं, जिसमें सभी जोड़ों को स्ट्रेच किया जाता है, इसे दस-दस मिनट के सेट में दो बार किया जा सकता है। इसे करने के बाद शरीर में आंतरिक

खिंचाव महसूस हो तो न करें।

कितनी देर कसरत करने से फिट रहेंगे?

स्वास्थ्य, उग्र शारीरिक क्षमता व रोगों (यदि हैं तो) के अनुसार ही व्यायाम चुनें। सामान्य व्यस्क को कसरत के लिए आधा घंटा निकालना ही चाहिए। बुजुर्गों के लिए भी हल्के-फुल्के योग, आसान स्ट्रेचिंग लाभदायक है।

संक्रमित हैं तो डॉक्टर से पूछ ब्रीदिंग एक्ससाइज करें

Appearance in Dainik Bhaskar by Dr. Arvind Aggarwal, Sr. Consult, Internal Medicine

तंबाकू या स्मोकिंग छोड़ने के लिए क्या करें

तंबाकू का सेवन करने वाले लोगों को लगता है कि इसे छोड़ना आसान नहीं है, जबकि ये आपकी इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। इस बारे में सीनियर कंसल्टेंट, (हेड एंड नेक, ब्रेस्ट एंड थोरेसिक ऑन्को सर्जरी यूनिट) एक्शन कैंसर अस्पताल, डॉ. राजेश जैन बताते हैं, 'सबसे पहले अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करें। इसके अलावा निकोटीन च्विंग गम्स की भी मदद ली जा सकती है, जिनके सेवन से तंबाकू की लालसा पर नियंत्रण रखने में मदद मिल सकती है। कोई भी एक स्वस्थ आदत, जिससे आपको संतुष्टि मिले उसे अपनाकर इस आदत से दूर हुआ जा सकता है। जहां तक बात है कोविड काल की, तो क्योंकि अब कुछ समय के लिए दुकानें बंद हैं और ऐसे पदार्थों की सप्लाई भी नहीं है, तो इस समय का फायदा उठाएं। इन पदार्थों के बगैर जीवनशैली विकसित करना सीखें। यदि तलब लगे तो फल, नट्स आदि खाएं या आपको व्यायाम करने जैसी आदतें डालनी चाहिए।'

डॉ. राजेश जैन

Appearance in Navbharat Times by Dr. Rajesh Jain, Sr. Consultant, Surgical Oncology

Appearance in Hindustan by

Dr. Arvind Aggarwal, Sr. Consult, Internal Medicine

All consultants are requested to kindly update Medical Director about the advanced and complicated surgeries performed so that same can be provided to PR Agency for publicity



वर्ल्ड एंटीबॉयर्नमेंट-डे

5 जून, स्पेशल

अवेयरनेस

डब्ल्यूएचओ को एक रिपोर्ट के मुताबिक विश्व भर में 24 फीसदी असामयिक मौतों का संबंध प्रदूषित पर्यावरण से है, और वायु प्रदूषण के कारण सालाना 4.2 मिलियन मृत्यु स्ट्रोक, हृदय रोग, लंग कैंसर और गंभीर श्वसन रोगों के कारण होती हैं। इससे साबित होता है कि वर्तमान दौर में प्रदूषण केवल समस्या न होकर एक जानलेवा खतरे के रूप में सामने मौजूद है। ऐसे में सभी को जागरूक होकर अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए आगे आना चाहिए।

वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव

वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों के बारे में नारायणा अस्पताल, गुरुग्राम के एचओडी एंड डायरेक्टर-इंटरनल मेडिसिन डॉ. सतीश कोल कहते हैं, 'वायु प्रदूषण के कारण लोगों की फेफड़ों की क्षमता घट रही है। डब्ल्यूएचओ की एक रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण एक आम भारतीय की जीवन प्रत्याशा को तकरीबन पांच साल कम कर देता है। इसके अलावा बहुत से अध्ययन बताते हैं कि वायु प्रदूषण के कारण एजिंग जल्दी होने लगती है। वायु प्रदूषण केवल फेफड़ों को नहीं खराब करता बल्कि स्ट्रोक, हृदय रोग, डायबिटीज आदि का भी जोखिम खड़ा करता है। अभी के दौर में कोविड और वायु प्रदूषण हमारे फेफड़ों के लिए एक साथ बेहद हानिकारक स्थितियां पैदा कर रहे हैं।'

जल प्रदूषण के दुष्प्रभाव

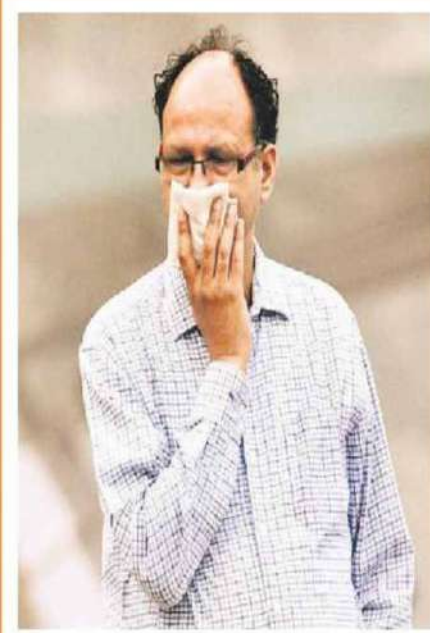
जल प्रदूषण के बारे में डॉ. कौल कहते हैं कि दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाला पानी हमारे घरों में इसी वातावरण से आ रहा है। ऐसे में जिन स्थानों पर जल प्रदूषण है, वहां व्यापक रूप से अस्वच्छ जल के सेवन के कारण तरह-तरह के रोगों का प्रसार होता है। इस संदर्भ में हमें बच्चों का सबसे अधिक खयाल रखने की आवश्यकता है। जाहिर तौर पर इस समस्या से निजात के लिए व्यापक पहल की आवश्यकता है। इसानी जरूरतें किसी एक व्यक्ति तक ही तो सीमित नहीं होती हैं लेकिन उसका असर सभी पर पड़ता है। इसलिए हमें आज ही इस बात की गंभीरता को देखते हुए अपने दैनिक जीवन में छोटे छोटे कदमों से लेकर नीति निर्माण के स्तर तक इससे निपटने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

भूमि प्रदूषण के दुष्प्रभाव

वायु और जल की तरह ही भूमि प्रदूषण का भी हमारे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है। इस बारे में श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली की सीनियर कंसल्टेंट-इंटरनल मेडिसिन डॉ. मनीषा अरोड़ा कहती हैं, 'जगह-जगह फेंक दिया जाने वाला कूड़ा-कचरे टॉक्सिक रसायनों में तब्दील हो जाता है, जो जमीन द्वारा सोख लिए जाने के कारण

हालांकि वर्तमान दौर में पूरी दुनिया के समक्ष कोरोना संक्रमण सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्या के रूप में मौजूद है। लेकिन कई वर्षों से प्रदूषण की समस्या भी मयावह रूप से बढ़ रही है, जो कई रोगों की वजह है। यहां तक कि प्रदूषित वातावरण में रहने वाले कोरोना पेशेज की भी कंडीशन ज्यादा गंभीर हो सकती है। ऐसे में प्रदूषण रोकने की दिशा में सार्थक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

प्रदूषण से बढ़ रही है गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं



आस-पास उगाई जाने वाली फसलों को प्रभावित कर सकता है। साथ ही प्लास्टिक का कचरा धीरे-धीरे माइक्रोप्लास्टिक में बदल जाता है, जो बहुत मुमकिन है जमीन में मिल जाने के कारण लंबे समय बाद पानी या हवा के जरिए हम तक और हमारे पेट में पहुंचे, जो बेहद खतरनाक है। इसके अलावा शहरों में बड़े-बड़े वेस्टेज डंपिंग ग्राउंड्स की यदि हालत देखें तो वहां से निकलने वाली गैसों आस-पास के इलाकों में डायरिया, टाइफाइड का कारण बन सकती हैं। और हवा के साथ यह फेफड़ों को भी प्रभावित

कर सकता है। गंभीर मामलों में प्रदूषण के कारण कैंसर भी पनप सकता है। साथ ही कचरे का सही मैनेजमेंट नहीं होने के कारण पनपने वाले कोड़े-मकौड़े, मक्खियां वातावरण को दूषित करते हैं और कई तरह की बीमारियां फैला सकते हैं। इसलिए बेहद जरूरी है कि हम अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक का इस्तेमाल जितना संभव हो सके कम करें। गीला और सूखा कचरा मैनेज करने की प्रक्रिया सार्वजनिक स्थानों के साथ ही घरों से शुरू करें। इससे भूमि प्रदूषण काफी हद तक रोका जा सकता है। *

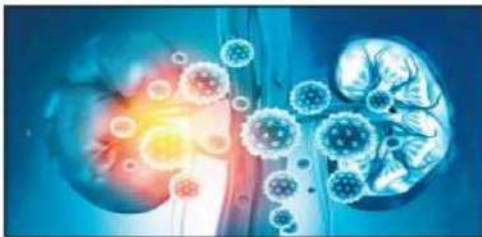
Appearance in Hari bhoomi by Dr. Manisha Arora, Internal Medicine

Covid can aggravate kidney problems

While the effect of Covid-19 is well known on cardiovascular diseases or lungs, health experts on Thursday warned that Covid-19 patients with kidney problems need to be highly cautious too, or it may damage their kidneys.

According to the experts, many individuals who develop Covid-19 experience kidney damage, or acute kidney injury (AKI), also known as acute renal failure (ARF).

AKI is a sudden episode of kidney failure or kidney damage that happens within a few hours or a few days. It causes a build-up of waste products in the blood and makes it hard for kidneys to keep the right balance of fluid in the body. It can also affect other organs such as the brain, heart and lungs. "Kidneys get affected in cases where Covid-19 infection is severe. It further causes AKI in about 10 to 20 per cent of hospitalized patients," Deepak Kalra, Additional Director-Nephrology, Fortis



Hospital, Shalimar Bagh, New Delhi, told IANS.

A study, published in the Clinical Journal of the American Society of Nephrology, showed that in patients with Covid-19, AKI was uncommon but was linked with a high risk of in-hospital mortality. The researchers found that the in-hospital mortality rate was 10 per cent in patients without AKI versus 72 per cent in patients with AKI.

"Covid-19 directly attacks immunity and organs which adds to the same severity of the virus-borne disease and seriousness of the disease itself," said Rajesh Aggarwal, Senior Consultant and Chief of

Action Kidney Transplant and Dialysis Department, Sri Balaji Action Medical Institute, New Delhi.

"A kidney patient needs complete care and prevention from every sort of infection," said Agarwal.

The factors associated with a higher risk of AKI include severe Covid-19 disease, high blood levels of creatinine (an indicator of kidney dysfunction), low blood levels of certain immune cells and high blood levels of a protein fragment indicative of elevated blood clot formation and breakdown. (IANS)

Appearance in The Pioneer by Dr. Rajesh Aggarwal, Sr. Consultant, Chief Of Action Kidney Transplant & Dialysis Department

Men's Health Week: Time to address male infertility, say doctors

Fertility challenges are often quite stressful for both men and women. Greater awareness of risks and lifestyle factors associated with infertility can allow men to take adequate steps to safeguard their reproductive health and overall well-being, say experts



How is male infertility diagnosed?

Male infertility can occur due to a lesser count of sperms in semen and for that purpose semen test is done. At the same time, erectile dysfunction also needs attention which can be caused due to uncontrolled diabetes leading to neuropathy. Some hormonal tests can be additionally suggested in such cases. Male infertility check-ups are very easy; the picture gets clear in semen analysis, hence, in case of doubt, these tests should be opted for, said Dr Ruby Sehra, senior consultant, gynaecology, Sri Balaji Action Medical Institute.

"Lack of awareness in the society limits and influences the approach towards male infertility. There is an equal contribution of a male partner for conception. As per a section of society, only women are blamed if a couple finds it difficult to have a child biologically, and in the majority of cases, only women are asked to get themselves tested. Neither women nor men should be shamed for it," said Dr Sehra.

Appearance in Men's Health by Dr. Ruby Sehra, Sr. Consultant, Gynaecology

भास्कर EXPLAINER

जानिए, वायरस से लड़ने वाले एंटीबॉडी क्या हैं और कैसे बनते हैं

विशेषज्ञों के मुताबिक अभी शरीर में कोरोना के खिलाफ दो तरह के एंटीबॉडी बन रहे हैं

डॉ. सुजीत कुमार सिंह, नेशनल हेल्थ फॉर डिजिटल कंटेंट के डायरेक्टर

डॉ. ज्योति मुट्टा, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट में माइक्रोबायोलॉजिस्ट

कोरोना संक्रमण की जांच के लिए कई शहरों में मिस्रो सर्वे हो रहा है। इसमें देखा जा रहा है कि शरीर में वायरस से लड़ने वाला एंटीबॉडी बना है या नहीं। एंटीबॉडी क्या है, कैसे बनता है, कितने दिन बीमारी से दूर रहते हैं। जानिए...



एंटीबॉडी क्या है? एंटीबॉडी अंग्रेजी के 'वाई' आकार के प्रोटीन होते हैं जो एक प्रकार की श्वेत रक्त कोशिकाएं हैं। एंटीबॉडी को इम्युनोग्लोबुलिन भी कहते हैं। जब बैक्टीरिया या वायरस (पैथोजन) शरीर में प्रवेश करता है तो इम्यून सिस्टम (इम्युनोग्लोबुलिन प्रोटीन) उससे लड़ता है और एंटीबॉडी तैयार करता है। इन्हें शरीर का गेटकीपर भी कहा जाता है।

कितने प्रकार की एंटीबॉडी होती हैं?

इसके कई प्रकार होते हैं, पर कोरोनावायरस के खिलाफ दो तरह के एंटीबॉडी बन रहे हैं। इम्युनोग्लोबुलिन-एम और इम्युनोग्लोबुलिन-जी। यह एंटीबॉडी कितने दिनों में बनता है और कितने दिनों तक शरीर में रहता है?

वायरस जैसे ही शरीर में प्रवेश करता है, उसके तुरंत बाद शरीर में आईजीएम बनना शुरू हो जाता है। करीब 14 दिन बाद दूसरा एंटीबॉडी आईजीजी बनता है, जो लंबे वक़्त तक रहता है। शरीर में आईजीएम वा आईजीजी एंटीबॉडी बन गया, तो क्या इसका मतलब यह है किसी को कोरोना हुआ और ठीक भी हो गया?

अभी मान कर चलना चाहिए कि कोरोना होकर ठीक हो गया होगा, पर सामान्य फ्लू के बाद भी इससे मिलते-जुलते एंटीबॉडी

बनते हैं। कोविड भी एक तरह का फ्लू ही है।

एक बार एंटीबॉडी बना, तो दूसरी बार वायरस परेशान नहीं करेगा? कोरोना के मामले में अभी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि एक बार एंटीबॉडी बनने के बाद दोबारा बीमारी हो सकती है या नहीं, क्योंकि इस पर अभी अध्ययन चल रहा है।

क्या ऐसा भी हो सकता है कि कोविड हुआ और पता भी नहीं चला, ऐसा कैसे होता है? इसे आसान भाषा में ऐसे समझें-कई बार जब हवा चलती है तो किसी को तेज झोंका लगता है, किसी को हल्का और किसी को पता भी नहीं चलता। कुछ हद तक यह वायरस भी ऐसे ही प्रभाव छोड़ता है। यह वायरस इतना इंटेंस नहीं है इसलिए कई बार लक्षण भी नहीं दिखते।

(जैसा पवन कुमार को बताया)

Appearance in Dainik Bhaskar by Dr. Jyoti Mutta, Sr. Consult, Laboratory Medicine